23 मार्च: शहीद-ए-आज़म भगत सिंह को श्रद्धांजलि
वैचारिक-राजनैतिक-सामाजिक क्रांति भगत सिंह के रास्ते

प्रभा शंकर मिश्र

ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरुद्ध चलने वाले स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में अनेक महान सपूतों का नाम स्वर्णाक्षरों में अंकित है। परन्तु उनमें भी शहीद-ए-आजम भगत सिंह का अप्रतिम स्थान है। देश को तथाकथित आजादी तो मिल गई परंतु दशक दर दशक से देश की उस विशाल आबादी का शोषण जारी है जो सबसे पहले सही मायने में आजादी की हकदार रही है। पूँजीवाद-साम्राज्यवाद अपने परिमार्जित रूप में देश को अपने चंगुल में जकड़े हुए है। ऐसी परिस्थिति में भगत सिह के बलिदान की प्रासंगिकता एकमात्र विकल्प बनकर उभरती है।

स्वतंत्रता संग्राम के दौरान महात्मा गाँधी के समानांतर भगत सिंह की बेहद लोकप्रियता थी और अपने छोटे से जीवन-काल में उनके चाहने वालों में गाँधी के नजदीकी अनेक गणमान्य कांग्रेसी भी थे।

भगत सिंह अपने प्रारंभिक दिनों में महात्मा गाँधी के प्रशंसक और अनुयायी थे। गाँधी के असहयोग आंदोलन में उन्होंने सक्रिय योगदान दिया। वे श्रद्धापूर्वक गाँधी के नेतृत्व को मानते थे और विश्वास करते थे कि एक दिन अवश्य हम सभी गाँधी के नेतृत्व में आजादी हासिल कर लेंगे। वर्ष 1922 में चौरी चौरा काण्ड के बाद जब गाँधी ने आंदोलन वापिस ले लिया तो उनका गाँधीवाद से मोह भंग होने लगा। शनैः शनैः उनका दृष्टिकोण क्रान्तिकारी संघर्ष की तरफ विकसित होने लगा। अपनी गिरफ्तारी और शहादत के पूर्व तक अनेक साहसी कारनामों को अंजाम देकर ब्रिटिश साम्राज्यवाद को गहरे आघात दिए वहीं एक क्रांतिचेता के रूप में भारतीय जनमानस को कहीं बहुत गहरे तक उद्वेलित करने में सफलता प्राप्त की।

गाँधी और गाँधीवाद तथा कांग्रेस के तौर तरीकों से अनेक अवरोध पाने के बावजूद भगत सिंह व्यक्तिगत रूप से गाँधी का बहुत सम्मान करते थे। उन्हें एक भद्र पुरूष तथा मानवतावादी कहा करते थे। जबकि गाँधी स्वयं भी भगत सिंह के प्रशंसक होने का दावा करते थे और सार्वजनिक सुअवसरों पर उनके देशभक्ति की उन्मुक्त कंठ से प्रशंसा करते थे परंतु जब उन्हें उनके साथियों समेत फाँसी की सजा हुई तब गाँधी ने ब्रिटिश अधिकारियों एवं व्यवस्था से अच्छा तालमेल एवं प्रभाव रखने के बावजूद वायसराय को पत्र लिखकर इन महान सपूतों को मिली सजाा को अनुमोदन किया।

हिंसा या अहिंसा:

हिंसा या अहिंसा इस प्रश्न पर भगत सिंह की विचारधारा स्पष्ट थी। उनका कहना था कि हिंसा रूपी बल का प्रयोग अन्याय करने के लिये होता है जो क्रांतिकारियों को नापसन्द है। वहीं अहिंसा का प्रयोग आत्मारूपी बल से है जिससे आत्मपीड़ा के दौर से गुजरना पड़ता है, वह भी इस आशा से कि विरोधी इस प्रक्रिया को देखकर अपना विचार बदल देगा और आपकी बात समझने की अवस्था में आ जाएगा। वहीं जब एक क्रांतिकारी कुछ विषयों पर आवश्वस्त हो जाता है तो अपने अधिकारों की माँग करता है, अनुरोध करता है, तर्क करता है, प्राप्ति के लिए दृढ़ संकल्प और दृढ़ इच्छा शक्ति जागृत करता है और यह सब अपने प्रभावकारी आत्मा रूपी बल के नेतृत्व में करता है। अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिये भयावह यातनाएँ सहने को सहर्ष तैयार रहता है तथा साथ ही उच्चतम बलिदान देने को तत्पर रहता है और यह सब अपने भौतिक सम्पूर्ण सामर्थ्य रूपी बल के सदुपयोग से करता है। आप क्रांतिकारियों के तौर तरीकों को चाहे जो संज्ञा दे परन्तु उसे हिंसा शब्द से नहीं समझ सकते हैं।

सत्याग्रह, सत्य के प्रति आग्रह है। मात्र आत्मारूपी बल के द्वारा ही ऐसा आग्रह क्यों ?उसमें शारीरिक सामर्थ्य रूपी बल का साथ में प्रयोग क्यों नहीं कर सकते ?वहीं आजादी हासिल करने का क्रांतिकारी का मार्ग अलग है। उसे आत्मारूपी बल के साथ नैतिक और शारीरिक बल को संपूर्ण मात्रा में झोंक देने में रत्तीभर परहेज नहीं होता है। इस तरह प्रश्न महज हिंसा का नहीं है, वरन् उसमें आत्मा और शारीरिक दोनों के मिश्रण से उत्पन्न बल का है।

देश की आजादी किसके नेतृत्व में हासिल की जाए इस बारे मं भी भगत सिंह की राय बेबाक थी। उनका कहना था कि देश की आजादी क्रांतिकारियों के नेतृत्व में मिलनी चाहिए। हम जिस क्रांति के लिए आशापूर्ण तरीके से संघर्षरत हैं उसको महज इस रूप में नहीं देखना चाहिये कि यह सशस्त्र संघर्ष विदेशी सरकार और उसके समर्थकों के साथ भारतीय जनता का है। यह संघर्ष एक नए सामाजिक समीकरण की स्थापना का है। यह क्रांतिकारी संघर्ष पूँजीवाद, वर्ग अंतर और सुविधाभोगियों के लिए का बनकर बरपेगा। वहीं यह संघर्ष करोड़ों सुविधा विहीन, भूखे तड़पते भारतीयों के लिए खुशी और समृद्धि का कारण बनो और उसे ब्रिटिश उपनिवेशवाद तथा उनके पिट्ठू देशी शोषकों के चंगुल से मुक्ति

दिलाएगा। हमारा मार्ग इसी तरीके से राष्ट्र निर्माण करेगा। जिसमें एक नए राज्य का जन्म होगा जहाँ वर्ग विहीन समाज होगा और सर्वहारा प्रतिष्ठित होगा। ऐसे समाज में राजनीति शक्ति के द्वारा सामाजिक विषमता के संक्रमण का सफाया कर दिया जाएगा। क्रांतिकारी सफलता की प्राप्ति के लिए अपने मार्ग का निर्धारण अपने तरीके से खुले आम और गोपनीय रूप में करते हैं। क्रांतिकारियों के पास दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों में शोषक सत्ता वर्ग एवं मेहनतकश मुक्तिकामी जनता के बीच चलने वाले संघर्षों का अनुभव जन्य इतिहास की थाती है जो हमारे संघर्षों का मार्ग दर्शन करता रहता है जहाँ सफलता प्राप्ति की मंजिल तक पहुँचने के पूर्व की असफलताएँ विचलित नहीं कर सकती।

एक तरफ जहाँ कांग्रेस का राजनैतिक संक्रमण स्वराज से पूर्ण आजादी की घोषणा के कलेवर में सामने आई थी वहीं कांग्रेस ने ब्रिटिश सरकार पर हमला करने के बजाए क्रांतिकारियों पर ही धावा बोल दिया। ऐसा पहला उदाहरण कांग्रेस ने 23 दिसम्बर 1929 को वायसराय स्पेशल ट्रेन हमले के प्रसंग पर लाहौर में चल रहे कांग्रेस अधिवेशन में सामने आया। इस प्रसंग में क्रांतिकारियों के विरोध में गाँधी के द्वारा निर्मित प्रस्ताव के पक्ष में 904 और विपक्ष में 823 मत पड़े। प्रस्ताव महज 81 मतों से पारित हो तो गया परन्तु कांग्रेस में गाँधी के नजरिए से भिन्न क्रांतिकारियों के हिमायती लोग भी काफी थे। इस तरह कांग्रेस भी विभाजित थी।

अपनी मजबूत तर्किक क्षमता, प्रभावशाली वाक्‌क्षमता के साथ कई साहसपूर्ण कृत्यों से भगत सिंह भारतीय जनमानस में गहरे बैठ गए थे। दो घटनाएँ फिर भी महत्त्वपूर्ण हैं। लाला लाजपतराय की मृत्यु के लिये जिम्मेदार ब्रिटिश पुलिस अधिकारी जे पी सॉण्डर्स का वध और एसेम्बली में फेंके गए बम की घटना, जिस कारण उन्हें जीवन की बलि देनी पड़ी। उनके ऊपर चली कानूनी कार्यवाही तथा सुखदेव, राजगुरू के साथ फाँसी के फँदे को चूम लेने के बाद पूरा देश रो उठा, काँप उठा और चीत्कार कर उठा। कांग्रेस के भीतर गाँधी से अलग राय रखने वालों की भारी तादात थी। नेहरू और सुभाष बाबू गाँधी से अलग राय रखते थे। नेहरू 'नोजवान भारत सभा' को भावी राष्ट्र के निर्माण की भूमिका में देखते थे और भगत सिंह के चमत्कृत व्यक्तित्व के कायल थे वहीं नेताजी सुभाष चन्द्र बोस उन्हें 'युवाओं में जागृति पैदा करने वाले नेता के रूप में देखते थे। जबकि गाँधी इन क्रांतिकारियों को भ्रमित युवा और शिथिल पड़ चुके विचार वाला और देश के दुश्मन के रूप में घोषित करने में संकोच नहीं किया। इनके महाना आत्मोत्सर्ग पर गाँधी कहते थे कि ये अबोध, अज्ञानी और भ्रमित युवा हैं, जिनका प्रयास निरर्थक और बेकार सिद्ध हो रहा है। और अपने क्रियाकलापों से ये लोग देश को पीछे ढकेल रहे हैं। वहीं कांग्रेस के कई प्रमुख नेता मोती लाल नेहरू, पुरूषोत्तम दास टंडन, शिव प्रसाद गुप्ता और शैकत अली क्रांतिकारियों को राजनैथ्तक और आर्थिक सहयोग दिया करते थे।

नई आर्थिक नीति, अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के जाल में देश के संसाधनों पर कब्जा और दोहन हो रहा है। धनी अस्मिता, सांस्कृतिक आजादी, शिक्षा, स्वास्थ्य सामाजिक सुरक्षा और खाद्य स्वालम्बन सब कुछ दाँव पर चढ़ चुका है। पूँजीवादी साम्राज्यवादी ताकतें नूतन रूपों में हल्ला बोल रहीहैं। सकल घरेलू उत्पाद की पचास फिसदी काला धन अधिपत्य जमा चुका है और नैतिकता को घोल कर पी चुके सफेद पोश नेतों की संख्या में तेजी से इजाफा हो रहा हैं। राष्ट्रीय स्तर पर पक्ष-विपक्ष की पार्टियाँ एक ही सिक्के के दो पहलू भर हैं। वाम ताकतें कमजोर पड़ चुकी हैं और इनके ऊपर विरोधियों के हमल तेज हो चुके हैं तथा जनता त्राहि-त्राहि कर रही हैं परन्तु उसे और उसकी आकांक्षाओं पर खरा उतरकर नेतृत्व देने वाला कोई नहीं हैं।

ऐसे घटाटोप अँधेरे में हमें शहीद-ए-आज़म भगत सिंह और अनय महान क्रान्तिकारियों की आड़ में देशी-विदेशी साम्राज्यवादी ताकतों को खुली चुनौती देने का वक्त आ चुका है। अभी देश में बहने वाली क्रान्तिकारियों की ऊर्जा की धार सूखी नहीं है। संभवतः ऐसे संकल्प के जरिये देश की तकदीर बदली जा सकती हैं और इससे अच्छी श्रद्धांजलि कुछ हाक भी नहीं सकती।

(लेखक प्रभाशंकर मिश्र जी एक स्तंभकार और एक जनसंगठन के सक्रिय सदस्य हैं)